मुगल काल में राजपूत शासकों की प्रशासनिक प्रणाली में भूमिका

Dr. Rajkumar, Assistant Professor, Department of History, Seth G.L. Bihani S.D. Post Graduate, Sriganganagar

सारांश

मुगल शासकों, विशेष रूप से अकबर के काल से, राजपूतों को प्रशासनिक ढांचे में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। यह शोध इस बात का अध्ययन करता है कि किस प्रकार राजपूत शासक मुगल प्रशासन में एकीकृत हुए, उन्हें मनसबदारी प्रणाली में क्या भूमिका दी गई, और उन्होंने सैन्य, न्यायिक व प्रांतीय प्रशासन में क्या योगदान दिया।

अकबर की उदार नीति और राजनीतिक दृष्टिकोण ने मुगलों और राजपूतों के बीच सहयोग का एक नया युग प्रारंभ किया, जिसमें कई राजपूत राजवंशों ने स्वेच्छा से मुगल सत्ता को स्वीकार करते हुए शासन का भागीदार बनना स्वीकार किया। इस एकीकरण से मुगल शासन को न केवल सैन्य शक्ति मिली, बल्कि स्थानीय प्रशासन में स्थायित्व और जनता के साथ अधिक प्रभावी संवाद भी संभव हुआ।

शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार राजपूतों की भागीदारी ने प्रशासनिक विविधता, क्षेत्रीय संतुलन, और साम्राज्य की दीर्घकालिक स्थिरता को सुनिश्चित किया। साथ ही, कुछ प्रमुख राजपूत व्यक्तित्वों जैसे राजा मानसिंह, भगवंत दास, और जयसिंह की प्रशासनिक व सैन्य भूमिका का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अंततः यह शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि मुगल-राजपूत संबंध केवल एक राजनीतिक समझौता नहीं था, बल्कि यह एक समावेशी प्रशासनिक दृष्टिकोण का प्रतीक था, जिसने भारत के मध्यकालीन इतिहास को एक स्थायित्व प्रदान किया।

महत्वपूर्ण शब्द: मुगल शासन, राजपूत नीति, मनसबदारी प्रणाली, अकबर, प्रशासनिक एकीकरण, समावेशी शासन, मुगल-राजपूत संबंध।